आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2500 • उदयपुर, शुक्रवार 29 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

चल पड़ी थमी हुई जिन्दगी

नरवाणा– हरियाणा के जींद जिले के नरवाना शहर में 25 जुलाई को निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। संस्थान की नरवाना शाखा के तत्वावधान में सम्पन्न शिविर में 37 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर तथा 25 को कैलीपर लगाए गए। मिलन पैलेस में आयोजित शिविर के मुख्य अतिथि महंत श्री अजयगिरि जी महाराज थे। अध्यक्षता नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री भारत भूषण जी गर्ग ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जय सिंह जी गर्ग, श्री प्रवीण जी मित्तल व राकेश जी शर्मा मंच पर बिराजे थे। स्थानीय शाखा के प्रभारी श्री राजेन्द्र जी गर्ग ने अतिथियों का स्वागत किया। कृत्रिम अंग लगाने का कार्य संस्थान के टेक्नीशियन श्री भंवरसिंह जी व श्री नरेश जी वैष्णव ने किया। संचालन श्री हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने जबकि व्यवस्था में श्री मुन्नासिंह जी, भरत कुमार जी व रामसिंह जी ने सहयोग किया।

छतरपुर– केयर इंग्लिश स्कूल, छतरपुर (मध्यप्रदेश) में आयोजित शिविर में 39 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) व 9 को कैलिपर प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि डॉ. रामकुमार जी अवस्थी थे। जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में उनके साथ मंच पर रॉटरी क्लब के सचिव श्री स्वतंत्र जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री मुकेश जी सोनी, इनव्हील क्लब की अध्यक्ष श्रीमती ज्योति जी चौबे समाजसेवी श्री पंकज कुमार जी, व श्री उमेश जी ललवानी मौजूद थे। अध्यक्षता रॉटरी क्लब के अध्यक्ष श्री मुकेश जी चौबे ने की।

गुरुग्राम– वैश्य समाज की सेक्टर–4 स्थित धर्मशाला में 25 जुलाई को सम्पन्न दिव्यांग जांच, ऑपरेशन, चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर से बड़ी संख्या में दिव्यांग भाई–बहन लाभान्वित हुए। मित्सुबिशी इलेक्ट्रिक ऑटोमोटिव इंडिया प्रा. लिमिटेड के प्रतिनिधि श्री विशाल जी नागदा के मुख्य अतिथ्य में सम्पन्न शिविर में 20 दिव्यांगों को ट्राइसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर, 10 को बैसाखी जोड़ी प्रदान की गई। जबकि 10 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व कैलिपर लगाने के लिए मेजरमेंट लिया गया। चार दिव्यांगों का पोलियो सुधार के लिए निःशुल्क ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। शिविर की अध्यक्षता समाजसेवी श्री रघुनाथ जी गोयल ने की। विशिष्ट अतिथि श्री रमेश जी सिंगला थे। दिव्यांगों का चयन डॉ. एस. एल. गुप्ता, टेक्निीशियन नाथूसिंह जी व किशनलाल जी ने किया। अतिथियों का स्वागत स्थानीय आश्रम प्रभारी श्री गणपत जी रावल ने जबकि संचालन श्री अखिलेश अग्निहोत्री ने किया।

कांगड़ा– हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के ज्वालाजी नगर में कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। मातृ सदन सरस्वती विद्यालय परिसर के निकट सम्पन्न शिविर में 28 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) तथा 40 के पांवों में कैलिपर लगाए गए।

टेक्नीशियन श्री नरेश जी वैष्णव व श्री किशन जी लौहार ने माप के अनुसार कृत्रिम अंग फिट किए। मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रेमकुमार जी धूमल थे। अध्यक्षता राज्य के पूर्व मंत्री श्री रमेश जी घवाला ने की। मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में नारायण सेवा संस्थान की हमीरपुर शाखा के संयोजक श्री रसीलसिंह जी मानकोटिया, पत्रकार श्री संजय जी जोशी, पूर्व मंत्री श्री रवीन्द्र जी रवि, समाजसेवी श्री पंकज जी शर्मा व श्री रामस्वरूप जी शास्त्री मौजूद थे। शिविर प्रभारी अखिलेश अग्निहोत्री ने अतिथियों का स्वागत एवं श्री रमेश जी मेनारिया ने आभार व्यक्त किया।

समावेशी और समान शिक्षा का अभियान

राज्य सरकार के निर्देशों के बाद अक्टूबर 2021 से नारायण चिल्ड्रन एकेडमी में करीब डेढ़ वर्ष बाद फिर से बच्चों की चहल–पहल शुरू हो गई है। न केवल बच्चों के अपितु उनके अभिभावकों के चेहरों पर भी मुसकान है। कोविड–19 के चलते एकेडमी पिछले डेढ़ वर्ष से बंद थी किंतु बच्चों के भविष्य को देखते हुए संस्थान ने 'घर से ही सीखें' अभियान के तहत शिक्षा की क्रमबद्धता को नियमित रखा।

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी व वंचित बच्चों को मुफ्त अत्याधुनिक शिक्षा देने वाला एक चैरेटी स्कूल है। जहां किताबे, स्टेशनरी, पोषक, अल्पाहार, भोजन आदि की सुविधाएं भी निःशुल्क हैं। बड़ी ग्राम स्थित हरी–भरी पहाड़ियों की गोद में स्थित संस्थान के सेवामहातीर्थ परिसर में यह विद्यालय अवस्थित है, जहां अनुभवी एवं प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा शिक्षा दी जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य कमजोर तबके के बालकों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पर आधारित यह स्कूल वर्तमान में प्राथमिक स्तर का है। जिसे भविष्य में सी.बी.एस. ई में कक्षा 12वीं तक अपग्रेड करने की योजना है।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

भाइयों और बहनों ये वाणी और कर्म क्या है? जैसे ये शरीर के अंग, जैसे ये हमारी दोनों किड़नियाँ जब माता के गर्भ ये बिन्दु से सिन्धु बने। एक बिन्दु से करोड़ों कोशिकाएं बनाई। अरबों बनी। 579 माँसपेशिया बनीं। 206 हड्डियाँ बनी। 17 हजार करोड़–खरब का ये महासमुद्र बना। आँखों के आंसू आ रहे हैं आने दीजिए।

हर आँख यहा यू तो बहुत रोती है,
हर बूंद मगर अश्क नहीं होती है।
देख कर रो दे जो जमाने का गम,
गिरे उस आँख से आंसू नहीं मोती है।।

जिन दोनों किड़नियाँ बाजार से नहीं लाये है। ये आपके –हमारे ठाकुर ने हमें दी है। एक बिन्दु से एक नहीं दो– दो किड़नियों ने जन्म ले लिया। एक बांयी तरफ एक दांयी तरफ। परन्तु जब जायेंगे किड़नियों भी साथ चली जायेंगी। उस समय पुण्य रहेगा। उस समय हमारे भावों की शुद्धि। कोई कहेगा महाराज ये भावों की शुद्धि आप बोलते हो क्या होती है? बार–बार भूतकाल के अपमानों का स्मरण नहीं करना। बार–बार नहीं लाना उन्होंनें एक बार कष्ट दिया बार–बार नहीं लाना आप सौ बार कष्ट देते हो अपने आपको माफ कर दो, क्षमा कर दो।

निर्मल मन जन मोहि पावा,
मोहि कपट– छल छिद्र ना भावा।।
ये भावों की शुद्धि।

सम्पादकीय

विश्व विघटन और संघटन का संयुक्त स्वरूप है। प्र.ति में टूटना और बनना सतत चल रहा है। पर कुछ बातें ऐसी हैं जिनका टूटना बड़ा घातक होता है। आज रिश्तेनातों में आपसी विश्वास टूट रहा है, जिससे रिश्तों मे टूटन स्पष्ट दिखाई दे रही है। हम बाहरी रिश्तों की तो बात छोड़ें, जो अंतरंग रिश्ते हैं, जिनका परस्पर अन्योन्याश्रित संबंध है, वे रिश्ते भी दिन–प्रतिदिन कमजोर होकर बड़ी संख्या में टूटने लगे हैं। यह टूटन इतनी भयावह है कि अनेक आशंकाएं सिर उठाने लगी हैं। परिवार तथा आपसी रिश्तेनातों में सामंजस्य, विश्वास और सदाशयता ध्वस्त सी हो गई है। आज परिवार की परिभाषा केवल पति–पत्नी और बच्चे रह गये हैं किन्तु इस नये परिभाषित परिवार में भी टूटन आ रही है। बच्चे, बड़ों को कालबाह्य मानकर उनसे कट रहे हैं। माता–पिता उनसे कट रहे हैं। यहाँ तक कि पति–पत्नी के रिश्तों में भी संदेह, अविश्वास तथा प्रभुत्ता की लड़ाई घुस गई है। कहाँ गया हमारा पारिवारिक सौहार्द्र ? इस देश व समाज में कभी ऐसा तो न था ? सोचें किस दुष्चक्र में फंसें हैं हम ? अपना कल्याण तो सोचें।

कुछ काव्यमय

रिश्ते नाते दरकते,
दिखते हैं अब आम।
जैसे सूरज ढल रहा,
सम्बन्धों की शाम।।
बढ़ी दरारें दिख रहीं,
रिश्ते हैं कमजोर।
यह पतंग कब की कटी,
छूटी इसकी डोर।।
ढीले सब सम्बन्ध हैं,
कैसे आय सुधार।
स्वारथ इस कर रहा,
दिन–दिन भारी मार।।
अब रिश्ते खण्डित हुए,
खण्ड–खण्ड तब्दील।
इक दूजे को सालते,
जैसी चुभती कील।।
जो दरार पैदा हुई,
कैसे वो भर पाय।
विश्वासों के सेतु ही,
अब तो पार लगाय।।

- वरदीचन्द राव

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

गांव के नौजवानों को रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण उपलब्ध कराने की योजना, कैलाश के मन में काफी समय से चल रही थी। इन युवकों को सुथारी काम सिखाने हेतु उसने अपने ऑफिस से खाली खोखे खरीद लिये थे। खोखे ऑफिस में ही पड़े थे, इन्हें भी लाकर बाजरे के साथ उसी मकान में रख दिये। कैलाश अपनी जीवन संगिनी कमला के उसके हर कार्य में कन्धा से कन्धा मिलाकर समर्पित भाव से सहयोग करने से धन्य था। वह सौभाग्यशाली था कि उसे ऐसी पत्नी मिली, वरना सेवा का इतना बड़ा प्रकल्प स्थापित कर पाना संभव नहीं होता। जब बाजरे की ट्रक खाली कराने कराने की समस्या उत्पन्न हुई तो कमला का उत्साह देखते ही बनता था। जीवन में पहली बार वह किसी के साथ साईकिल के पीछे बैठी और जगह तलाशने निकली थी।

गोगुन्दा के समीप मोकेला गांव है। यहां गांव का ही एक सुथार युवकों को सुथारी का प्रशिक्षण देने को तैयार हो गया। ऑफिस में जो बेकार खोखे पड़े थे, वे खरीदकर बाजरे वाले मकान में रख दिये थे। सभी खोखे मोकेला भिजवा दिये, सुथारी के आवश्यक औजार, कीलियां वगैरह भी खरीद कर भिजवा दी। पहली टोली में 15 युवकों को 6 माह के प्रशिक्षण हेतु चयनित किया गया। इन्हें टेबल, कुर्सी, स्टूल वगैरह बनाने का काम सिखाया गया। यह प्रयोग सफल रहा तो इसी प्रकार के जनोपयोगी कार्यों का प्रशिक्षण शुरू करने की सोची। सिलाई कार्य का प्रशिक्षण देने की योजना उसके मन में काफी दिन से कुलबुला रही थी। उस समय श्रीमती मालविका पंवार उदयपुर की अतिरिक्त कलेक्टर थी। उनकी कल्याण कार्यों में काफी रूचि थी। तब कथौडिया परिवार के लोग सरकार के एक निर्णय से बेकार हो गये थे। ये लोग कत्था निकाल कर बेचने का काम करते थे। मगर सरकार ने यह समूचा कार्य ही ठेके पर दे दिया था जिससे इनकी मुश्किलें बढ़ गई थी। सिलाई प्रशिक्षण देने के सिलसिले में कैलाश इनसे मिलने गया तो वे मदद को तैयार हो गई। तब सरकार की एक स्काईट योजना आई थी, इसमें सिलाई सीखने वालों को भत्ता दिये जाने का प्रावधान था। इस योजना हेतु आवेदन करने की अन्तिम तिथि उसी दिन थी। आवेदन भी दोपहर 12 बजे तक जमा कराना था।

अंश - 147

अपनों से अपनी बात

हमारा जीवन अच्छा हो

भाइयों और बहनों मैं आप जैसा ही व्यक्ति हूँ। कोई बड़ा आदमी नहीं हूँ। कोई व्यासपीठ पर बैठने मात्र से बड़ा नहीं हो जाता, श्रवण करने वाला छोटा नहीं हो जाता। आप और हम सब एक है। ये कथा हमें कहती है उर्मिला जी जब पूछ रही है, मैं क्या करुं चलूं फिर रहूं लक्ष्मण ने सोचा ओह! कैसे कहूं चलो! फिर रहो?

पत्नी सहधर्मिणी है, धीरज, धर्म मित्र और नारी आपद्काल परखिये चारी। मैं तो जोड़ना चाहता हूँ। धीरज धर्म पुत्र और नर नारी जैसे नारी को विपत्ति के समय साथ देना चाहिए, ऐसे पुरुष को भी देवियों के विपत्ति के समय उनका साथ देना चाहिए, ये धर्म है, ये मर्म है, ये कर्म है।

ये दलाली धर्म की है, ये कहना नहीं मर्म की है, ये नरमायी हाकमाई की गरमायी, ये जितनी भी कथा हजारों कहानियाँ एक दृष्टांत सागर करके पुस्तक आती है। मार्केट में मिलती है। 100–200 में मिलती उसमें साढ़े तीन सौ तक दृष्टांत लिखे हुए है। यदि कहानियाँ सुनी मात्र, यदि प्रवचन सुना मात्र, यदि रामचरित मानस को एक रेशमी कपड़ा चढ़ाकर ऊपर टॉड में रख दिया और फिर रोज आरती दो बार कर रहें, अगरबत्ती जला रहे हैं, पुष्प चढ़ा रहे हैं। उसका भी लाभ होता ही होगा। लेकिन बड़ा लाभ तो तब होगा, जब करुणा आ जावे। ये दया की रेलगाड़ी में बैठना आ जावे। जब दया की रेलगाड़ी में बैठते हैं, तो धर्म समझ में आता है।

पहला स्टेशन बचपन का लगता।।

.....देखा अजब नजारा है।।

ये क्षमा करना आप उम्मीद मत करो कि आपसे सब क्षमा मांगते हैं, अरे भाई ये हम सुधरेंगे युग सुधरेगा। हम बदलेंगे युग बदलेगा। हम तो अपनी बात करें, अपना भला किसमें अपना भला इसमें कान का जो छेद है, जिन हरि कथा सुनी नहीं कान्हा श्रवण रंध्र ये कान ऐसा ही बना। साँप है न सीधा नहीं जाता। पानी सीधा है लेकिन झोंक टेड़ी चलती है। इसलिए कहा है।

कह रहीम कैसे निभे,
कैर बेर को संग।
वे डौलत रस आपणे,
उनके फाटत अंग।

फिर साँप की बाम्बी जैसा हो जायेगा। यदि सत्संग को जीवन में उतारा तो कान का छेद सीधा हृदय में उतरना चाहिए। उर्मिला पूछ रही चलूँ या फिर रहूं। लक्ष्मण ने कहा कैसे कहूँ चलो कि रहो।

यदि तुम भी प्रस्तुत होगी,
तो संकोच सोच दोगी।
प्रभुवर बांधा पायेंगे,
छोड़ मुझे भी जायेंगे।।
रहो –रहो प्रिय रहो,
मेरे लिए यही सहो।

लक्ष्मण जी ने मन ही मन में समझा दिया। उर्मीले तुम यहीं रह जाओ, और सीता जी ने अपने प्राणपति भगवान श्रीराम को कहा था। सास ससुर की स्नेहलता बहन उर्मिला महाव्रता पूर्ण करेगी, वही यहाँ जो मैं भी कर सकी कहाँ? मेरे से ज्यादा सेवाभावी है, मेरी छोटी बहन मेरे देवराणी बहना वह भी सब कुछ मान गयी। बिन स्वभाव से मान गयी।

श्री सीता के आँखों से कन्धे पर पड़े झर–झर आँसू के तरल हीरे से कहा उन्होंने धीरे से बहन धैर्य का अवसर है, ये धैर्य भी धर्म है। धर्म के 10 लक्षण में धैर्य तुरन्त प्रतिक्रिया नहीं करना। किसी ने उनको कह दिया कुछ रुक जाइये। कुछ क्षणों बाद बोलिये आपका उत्तर, हमारा उत्तर, मेरा उत्तर, मैं आपके कहने वाला कौन होता हूँ? मैं भी आप में शामिल हूँ।

ये प्रेम की बातें, ये मधुरता की बातें है, ये भावशुद्धि की बातें है। केवल बातें ही नहीं इन्हें जीवन में उतारना है, भावशुद्ध नहीं हुई तो वाणी शुद्ध कैसे होगी? भाव की समता वाणी और कर्म है। भाव, वाणी, प्रेम, कर्म शुद्ध होगा तो जीवन स्वतः ही सरल शुद्ध होगा। जीवन के सभी संकट भगवान श्रीराम दूर करेंगे।

–कैलाश 'मानव'

सहायता का क्रम

जुलियो इगलेसियस का बचपन से एक ही सपना था –अपने पसंदीदा क्लब–रियल मेड्रिड की तरफ से फुटबॉल खेलना। वह दिन भर अभ्यास करते रहते थे। धीरे–धीरे करते वह एक अच्छे गोलकीपर बन गए। 20 वर्ष की उम्र तक आते–आते उनके बचपन का सपना साकार होने का समय धीरे–धीरे नजदीक आने लगा।

एक दिन उन्हें रियल मैड्रिड खेलने के लिए अनुबंधित कर लिया गया। फुटबॉल के अनेक दिग्गज जुलियो के खेल से प्रभावित थे। वे सभी यह मान कर चल रहे थे कि जुलियो शीघ्र ही स्पेन के पहले दर्जे के गोलकीपर बन जाएँगें।

1963 की एक शाम को हुई एक भयानक कार–दुर्घटना ने जुलियो की जिन्दगी को पूरी तरह बदल कर रख दिया। रियल मेड्रिड और स्पेन का नंबर वन गोलकीपर बनने वाला जुलियो, अस्पताल में पड़ा हुआ था। उसकी कमर से नीचे का हिस्सा पूरी तरह से लकवाग्रस्त हो चुका था। चिकित्सक इस बात को लेकर भी पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थे कि जुलियो फिर कभी चल पाएँगे या नहीं? फुटबॉल खेलना तो बहुत दूर की बात थी, वापस ठीक होना ही बहुत लंबा और दर्दनाक अनुभव था। जुलियो इस घटना के बाद जीवन से निराश हो चुके थे।

18 महीनों तक बिस्तर पर रहने वाले जुलियो की ज़िन्दगी पुनः पटरी पर लौटने लगी, जब उन्हें नर्स के द्वारा गिटार भेंट किया गया। जुलियो ने गाने, कविताएँ लिखने के साथ गिटार बजाना और गाना सीखा।

कार–दुर्घटना के 5 वर्ष बाद उन्होंने एक संगीत प्रतियोगिता में भाग लिया तथा Life goes on the same* गीत गाकर प्रथम पुरस्कार जीता। आज वह विश्व के एक महान गीतकार, संगीतकार, गायक और गिटार वादक हैं। कहने का तात्पर्य है कि यदि आपका कोई एक सपना पूरा नहीं हो पाया हो तो आपको निराश होने की आवश्यकता नहीं है, जीवन में आपके लिए अभी भी बहुत–कुछ बचा हुआ है। उसे हासिल करने के प्रयत्न कीजिए, क्योंकि Life goes on the same.....

– सेवक प्रशान्त भैया

कब्ज, तनाव और हड्डी से जुड़े रोगों से बचाता है अमरुद

अमरूद हर जगह मिलने वाला फल है। सर्दी में इसे लोग अधिक पसंद करते हैं। यह न केवल सस्ता बल्कि बहुत गुणकारी भी है। इसे छिलके सहित ही खाएं।

पोषकता– इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइडेट फाइबर के साथ कई प्रकार के विटामिन्स होते हैं। संतरे से चार गुना अधिक विटामिन सी होता है। विटामिन ए,ई,के, बी 3, बी 6 और फोलेट, पैटोथेनिक एसिड, थायमिन आदि होते है। खनिज में पोटैशियम, मैंगनीज, मैग्नीशियम, कॉपर, कैल्शियम, आयरन, फास्फोरस, जिंक आदि भरपूर मात्रा में मिलते है।

खाने के लाभ –

अमरूद सुबह खाली पेट काला नमक के साथ खाएं तो पाचन की परेशानी व कब्ज में आराम मिलता है। मैग्नीशियम, तनाव बढ़ाने वाले हार्मोन का कंट्रोल और फाइबर व पोटैशियम ब्लड में कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित करते हैं। दिल की धड़कन और ब्लड प्रेशर नियमित रहता है। इसके एंटीऑक्सिडेंट, एंटीबैक्टीरियल और एंटीइंलेमेटरी गुण इम्युनिटी भी बढ़ाते हैं। हड्डियों के लिए भी फायदेमंद है। अधिक खाने से पेट खराब होता, ज्यादा जुकाम हो तो खाने से बचें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

एक बार राधेश्याम भई साहब दूल्हा बन के गये तब मैं गया था। फतह मैमोरियल में हमारी बारात ठहरी थी।

हाँ, बहुत बढ़िया फतह मैमोरियल सूरजपोल पे, नुक्कड़ पे। वरदीचंद, दीपलालजी, हरकलालजी अग्रवाल, हरकलालजी बड़े भाई। दीपलालजी, दीपलालजी की बिटिया एक बेटी पुष्पा उसके सगे नानाजी राजमलजी, डॉक्टर राजमलजी अग्रवाल साहब बड़े प्रसिद्ध उस समय। उनके बेटे डॉक्टर रोशनलालजी अग्रवाल मामाजी, पुष्पाजी के सगे मामाजी, आँखों के डॉक्टर। हाँ तो मैं एक बार गया था, उसके पहले थोड़ा–थोड़ा याद है। बापूजी ने, बाई ने मुझे बताया मेरी भूख बहुत बढ़ गयी थी– पाँच साल की उम्र में।

रोटी की भूख लगे, बार–बार भूख लगे रोटी खाऊं, रोटी खाऊं पेट बढ़ने लग गया। उस समय बापूजी उदयपुर लाये थे, जनरल हॉस्पीटल में। इलाज कराया था, ठीक हो गया। उस समय बस स्टेण्ड स्वप्नलोक के पास हुआ करता था। स्वप्नलोक के पास एक छोटा प्लॉट, चार हजार स्क्वायर फिट जैसा खांचा था। पिक्चर पैलेस और स्वप्नलोक उनके बीच में खांचें में बसें खड़ी होती थी। हाँ, महाराज, सामने टाउनहॉल। मनोहर स्टूडियों में फोटू खिंचवाया था। उन्होंने कहा था– टाई भी पहन लो, टाई भी पहन ली थी। दो रूपये में चार फोटू, अलग – अलग।

उदयपुर जायेंगे तो किनसे मिलेंगे, किसी से जान– पहचान नहीं है। किसी भैया ने कहा– वहाँ आर.एल. गुप्ताजी, रामलाल जी गुप्ताजी। वो भी जूनीयर एकाउन्ट्स आफिसर हैं, आपसे सीनियर है भला आदमी है। आप कहे तो मैं फोन कर देता हूँ, भला आदमी है। आप सीधे उनके पास चले जाना। जरूर जरूर, आपकी कृपा हो जाये, एक फोन हुआ। गुप्ताजी ने कहा– अच्छा– अच्छा भेज दीजिये मेरे पास। पाँच –चार बोरी और दो– चार कार्टून तो सरदारशहर से उदयपुर के लिए बिल्टी करवाई। दो बोरियाँ पुस्तकों की लेकर के उदयपुर के बस स्टेण्ड पहुँचे। सेक्टर तेरह में रामजीलाल गुप्ता साहब का ऑफिस था। 10 नवम्बर 79 को कैलाशचन्द्र अग्रवाल वहाँ पहुँचा, नमस्कार किया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 273 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023